

**निबसना** अ.क्रि. (तद्.) निवास करना, रहना वि.

1. निर्वस्त्र 2. जिसके पास बरतन न हो।

**निबह** पुं. (तद्.) समूह, झुंड।

**निबहना** अव्य. (तत्.) 1. जीवन-निर्वाह होना 2. परस्पर संबंध ठीक बना रहे इस हेतु तालमेल रहना 3. कमी न रह पाना जैसे- किसी तरह विवाह निबह गया।

**निबारना** स.क्रि. (तद्.) 1. निवारण करना 2. बढ़ने से रोकना 3. दूर करना, हटाना, 4. समाप्त करना।

**निबाह** पुं. (तद्.) 1. निर्वाह, गुजारा 2. धैर्यपूर्वक जिस किसी प्रकार किया जाने वाला निर्वाह 3. (प्रतिज्ञा, वचन आदि का) पालन, पूर्ति, निभाव।

**निबाहना** क्रि.स. (तद्.) 1. जीवन-निर्वाह करना 2. किसी तरह निर्वाह करना (प्रतिज्ञा, वचन आदि का) पालन करना, पूरा करना 3. निभाना।

**निबिड** वि. (तद्.) 1. घना, गहरा, घनघोर 2. कठिन, दृढ़, अभेद्य।

**निवृत्त** वि. (तद्.) निवृत्त 1. किसी कार्य को निपटाने के बाद की स्थिति 2. पूरा किया हुआ, जो पूरा हो चुका हो (कार्य) 3. जिसने कार्य पूरा कर लिया हो।

**निबेड़ना** स.क्रि. (तद्.) 1. बंधन से छुड़ाना 2. चुनना, छाँटना, हटाना दे. निपटाना।

**निबेड़ा** पुं. (तद्.) 1. निबेड़ने, निपटाने या सुलझाने की क्रिया या भाव 2. निपटारा, छुटकारा, मुक्ति, बचाव, रक्षा 3. निर्णय, फैसला।

**निबेरा** पुं. (तद्.) दे. निबेड़ा।

**निबोधन** पुं. (तत्.) 1. कोई काम या बात समझने/सीखने की अवस्था अथवा भाव, समझना, सीखना 2. समझाने/सिखाने की अवस्था अथवा भाव, समझाना, सिखाना।

**निबोरी** स्त्री. (तद्.) नीम का फल पर्या. निबोली

**निभ** पुं. (तत्.) 1. प्रकाश, नमक, दीप्ति, चाँदनी 2. प्रकट होने की क्रिया या भाव, प्रादुर्भाव 3.

धूर्तता, चालाकी वि. 1. समान, सदृश 2. चमकदार तुल्य।

**निभना** अ.क्रि. (तद्.) 1. संबंध, व्यवहार आदि का ठीक ठाक से चलते रहना 2. निर्वाह होना, स्थिति के अनुसार स्वयं को बनाते हुए रहना 3. कार्य का संपन्न होना, पूरा होना 4. नियम, वचन आदि का पालन होना।

**निभरम** वि. (तद्.) 1. (वह कार्य) जिसमें कोई भ्रम न हो, शंकाहित 2. (तत्) (वह व्यक्ति) जिसे कोई भय न हो।

**निभाग** पुं. (तत्.) किसी पक्षी के अंडे की भीतरी झिल्ली को पीतक से जोड़ने वाली तंतु।

**निभागा** वि. (तद्.) भाग्य जिसके अनुकूल न हो, भाग्यहीन, अभागा, हतभाग्य।

**निभाना** स.क्रि. (तद्.) दे. निबाहना।

**निभाव** पुं. (देश.) 1. निभना/निभाने की क्रिया या भाव, निर्वाह 2. अनुकूलन या समझौते की स्थिति।

**निभृत** वि. (तत्.) 1. रखा हुआ 2. छिपा हुआ, गुप्त 3. निश्चित 4. स्थिर, निश्चल 5. शांत, धीर 5. निर्जन, एकांत।

**निमंत्रण** पुं. (तत्.) किसी शुभ कार्य के लिए या किसी अवसर पर आने के लिए किसी से आदरपूर्वक कहना अथवा लिखित निवेदन करना, बुलावा, आह्वान, न्यौता, भोजन या अल्पाहार, चाय-पानी के लिए न्योता, आमंत्रण।

**निमंत्रना** स.क्रि. (तद्.) निमंत्रण देना, न्योतना, आदरपूर्वक बुलाना।

**निमंत्रित** वि. (तत्.) जिसे किसी काम के लिए निमंत्रण दिया गया हो, आहूत।

**निमग्न** वि. (तत्.) 1. डूबा हुआ, मग्न 2. तन्मय, लीन, तल्लीन 3. किसी कार्य, चिंतन, भाव आदि में निरंतर व्यस्त।

**निमग्न पूंजी** स्त्री. (तत्.+देश.) वाणि. व्यापार में वह पूंजी जो अधिकांशतः शुरू में लगाई जाती है और जिसको पुनः प्राप्त करना या उससे कुछ लाभ प्राप्त करना असंभव ही होता है।